[Shrimati Sushila Shankar Adivarekar]

tion activities which also add to pollution if proper care is not taken.

Sir, I know 1 am taking a lot of time of the House but there is one small point. Most of the polluting industries are DGTD registered unit except sugar mills and vanaspati units. DGTD and Central Excise Organisation are in a better position to measure water consumption by industries and collection of cess from them. And so it would be helpful if DGTD statistics collection proforma includes data about water use. This will definitely give us an idea about the relationship between production figures and usage of water.

In conclusion I would only like to bring to your notice that the amount of cess is not an important problem but it is the sincerity of the implementation of the Act in the country which is very necessary and I hope the Minister will take this into consideration.

SHRI SIKANDAR BAKHT: Sir, I am extremely thankful to the hon. Member for her interest in the subject and the suggestions that she has made. But I really do not have anything to add to what I have already said. I would only like to tell the hon. Member that I was absolutely not being discourteous to her. What I would suggest is that, if she goes through the text of my speech she will find answers to most of the points which she has made.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SHYAM LAL YADAV): The question is:

"That the Bill be returned."

The motion was adopted

THE SALARIES AND ALLOWANCES OF MINISTERS (AMENDMENT) *BILL*, 1977

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HOME AFFAIRS (SHRI DHANIK LAL MANDAL): Sir, I beg to move:

"That the Bill further to amend the Salaries and Allowances of Ministers Act 1952, as passed by the Lok Sabha, be taken into consideration."

Sir the salaries, allowances and other privileges of Cabinet Ministers Ministers of State and Deputy Ministers are governed by the Salaries and Allowances of Ministers Act, 1952, and the rules made thereunder viz. (i) the Ministers (Allowances Medical Treatment and other Privileges) Rules, 1957; and (ii) the Ministers' Residences Rules, 1962. Sub-section (1) of section 11 of the Salaries and Allowances of Ministers Act 1952 empowers the Central Government to make rules for carrying out the purposes of the Act.

The Committee on Subordinate Legislation of the Lok Sabha, which had occasions to examine the rules made under section 11 of the said Act, stated that although it did not find any reason to comment adversely on use of these wide powers by the Government, yet in financial matters, in order to avoid uninformed or misinformed criticism and keeping in view the democratic principles and the larger public interests, it would be appropriate that such powers should be exercised by the House itself. The Committee had also observed that in cases where it was considered necessary by the House to delegate the power to make rules to a subordinate authority in order to save the time of Parliament, it should be provided that rules made by a subordinate authority should in such cases become operative only after an affirmative vote of the House was obtained. Such a procedure was considered less rigid and less cumbersome than the ordinary process of legislation. The Government have accepted the recommendations of the Committee. In the past due to administrative reasons, it became necessary to give retrospective effect to certain rules. As there is no provision in the said Act for giving retrospective effect to the rules, it is proposed to validate the

rules so framed. The proposed Bill seeks to achieve these objectives.

This is a very simple Bill and I commend it for the acceptance of the House.

The question was proposed.

श्री कल्पनाथ राय (उत्तर प्रदेश) आदरणीय उपसभाध्यक्ष महोदय, आज सरकार जो बिल इस सदन के सामने लाई है, इसका मैं स्वागत करता हूं । लेकिन गांधी जी का नाम लेकर, सादगी का और कर्तव्य का नाम लेकर यह सरकारसत्ता में आई और दिल्ली पहुंचने के बाद लोकनायक जय प्रकाशनारायण जी के नेतृत्व में गांधी जी की समाधि पर गांधी जी के चेले और गांधी जी के हत्यारे दोनों ने शपथ खाई कि सादगी और कर्तव्य, देश सेवा नारा होगा और आम जनता की सेवा हमारा कर्तव्य होगा । लोगों के दिलों में आशा के चिराग जले थे लोगों के मन में आशा के अंकुर प्रस्फुटित हुए थे कि सत्ता की राजनीति का परिवर्तन हुआ, अब देश में बहार आयेगी । लोगों ने सोचा था एक नया इंकलाब आया है, नई क्रान्ति आई है, यह सोचकर जाने अनजाने देश की जनता ने इस दल को पावर में लाने के, लिए काम किया और इस सरकार के मंत्रियों ने और इस सरकार के नेताओं ने देश के कौने-कौने में घूमकर इस बात का प्रचार किया कि कांग्रेस के नेता, कांग्रेस के मंत्री तो बड़ें-बड़ें बंगलों में रहते हैं, कांग्रेस के मंत्री तो हजारों रुपया टेलीफान पर खर्च करते हैं, रात-दिन विदेश की यात्रायें करते हैं, एयर-कंडीशन में रहते हैं, बिजली के पंखें चलाते हैं, लाखों रुपया महीना उनके ऊपर खर्च होता है, चरित्र-हत्या का एक वातावरण कंटीन्यूअस या लगातार चलाकर जनता के मन में झूठी मन-गढ़न्त बातें कहकर ये लोग आज सत्ता में आये। लेकिन क्या जनता सरकार के मंत्री कांग्रेस के मंत्रियों से एक नया पैसा कम तनख्वाह लेते हैं, क्या जनता सरकार के मंत्री कांग्रेसी मंत्रियों की अपेक्षा कम टेलिफोन का इस्तेमाल करते हैं ? क्या जनता सरकार के मंत्री कांग्रेसी मंत्रियों से कम विदेश यात्रायें करते हैं ? क्या उनसे छोटें बंगलों में रहते हैं ? क्या जनता सरकार के मंत्री कोई सादगी और कर्तव्य का या गांधी जी के आदर्शों के अनुरूप कोई आचरणा करने का काम करते हैं ?

आदरणीय उपसभाध्यक्षजी, देश की जनता के मन में जो एक आशा और विश्वास जगा था उस आशा और विश्वास के दिये जो उनके दिलों में जले थे वह दिये नौ महीने में बुझ गये और आज एक अंधकार सा छाया हुआ है और गांधी जी के नाम को लेने वाले ही गांधीजी के शत्रु गृह मंत्री समाधि पर शपत करने के बाद जब आये तो उन्होंने राजनीत के दो हथियार अपनाये ।

श्रीमन्, हिन्दुस्तान एक अर्द्ध-विकसित देश है । एशिया और अफ्रीका के मुल्कों की आजादी के बाद, सन 1947 में हिन्दुस्तान ही केवल आजाद नहीं हुआ, एशिया और अफ्रीका के सैकड़ों मुल्क भी 1947 के बाद आजाद हुए थे—लेकिन 4—5 वर्ष के अन्दर एशिया और अफ्रीका के 90 बड़े मुलकों में साम्राज्यवादी, उपनिवेंशवादी, पूंजीवादी ताकतों की साजिश से प्रजातंत्र का गला घोंट दिया गया और हिन्दुस्तान ही ऐक ऐंसा देश एशिया और अफ्रीका के बीच था जहां प्रजातंत्र पिछले 30 वर्षों से कायम रहा जब कि लगातार साम्राज्यवादियों और उपनिवेशवादियों ने पूंजीवादी ताकतों ने अमरीका में यह प्रयास किया कि हिन्दुस्तान में प्रजातंत्र का गला घोंट दिया जाए।

आदरणीय उपाध्यक्ष महोदय, पहली बार सत्ताका परिवर्तन हुआ, सोचा था लोगों ने कि नये आदर्शों की स्थापना होगी । लेकिन कांग्रेस का राज गया, प्रजातंत्र में विरोधी दल भी सत्ता में आते हैं, सत्तारुढ़ दल विरोध में बैठते हैं, ये स्वस्थ परंपरायें दुनिया में कायम होती हैं, पहले हम सत्ता में थे, आज वह सत्ता में है, इसमें कोई बुरी बात नहीं है क्योंकि दोनों ने देश की जनता के सामने वचन दिया है देश की जनता की सेवा करने का । लेकिन यह जनता सरकार के लोगों ने सत्ता में आने के बाद चरित्र-हत्या की और जाब-पांव को

[श्री कल्पनाथ राय]

अपनी राजनीति का आधार बनाया और भारत का गृह मंत्री जात-पांत का जहरीला नाग बनकर एक फुंकार कर रहा है। और जब तक इस देश की जनता जात-पात को चलाने वाले अपने गृह मंत्री की थुथनी को कुचल नहीं देगी तब तक भारत में प्रजातन्त्र कायम नहीं रह सकता है। इन लोगों का काम ही चरित्र हत्या करना रह गया है। जहां तक गांधी जी का सवाल है और ये लोग अपने आपको गांधी जी का अनुयायी मानते है लेकिन क्या गांधी जी ने कहीं भी चरित्र हत्या को प्राथमिकता दी थी? इन लोगों का काम तो रात दिन झूठ बोलना है। रात दिन आल इंडिया रेडियो से झूठा प्रचार किया जाता है मैं समझता हूं कि जनता पार्टी के लोगों का काम सिर्फ असत्य भाषण करना रह गया है। आपको यह जानकर ताज्जुब होगा कि कल ही आल इंडिया रेडियो से एक बयान आया कि संजय गांधी और उन के साथी रेल दुर्घटनायें करा रहे हैं। मैं समझता हूं कि हमारे देश की 60 करोड़ जनता इस तरह के पाप, इस तरह के गन्दे और इस तरह के पापी लोगों का मुंह भी देखना नहीं चाहता है। ये लोग इस देश में प्रजातंत्र नहीं ला सकते है। आजकल दिन रात आल इंडिया रेडियो से केवल मात्र चरित्र हत्या की जा रही है। मैं पूछ ना चाहता हूं कि इस तरह से आप इस देश में कौन सी परम्परा कायम करना चाहते है? आपने जांच आयोग नियुक्त किये। इन छः हीनों के अन्दर जांच आयोग के माध्यम से केवलमात्र चरित्र हत्या का प्रचार किया गया है। इस देश की महान नेता भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी के खिलाफ आपने सारे देश की ताकत लगाकार जांच कराई, लेकिन जांच में आपको एक भी चीज ऐसी नहीं मिली जिससे उनके विरुद्ध कोई कार्यवाही की जा सके। परन्तु फिर भी आपको शर्म नहीं आती है। आप लोग अखबारों में झूठी खबरें फैलाते है कि उनके इतने करोड़ रुपए स्विटजरलैण्ड के बैंक में जमा है। आपने पूरे नेहरू परिवार को बदनाम करने की कोशिश की है। आप लोग श्रीमती इंदिरा गांधी, श्री जवाहर लाल नेहरू की चरित्र हत्या करना चाहते हैं। आपकी पार्टी का सिर्फ यही काम रह गया है कि आप इन लोगों की चरित्र हत्या करें। मैं साफ तरीके से कहना चाहता हूं कि आप लोग सत्ता में केवल चन्द दिनों के मेहमान है। जिस परम्परा पर आप चल रहे है, अगर यही परम्परा आगे भी कायम रही और हम लोग सत्ता में आए तो फिर आप देखिए कि क्या होता है। मैं समझता हूं कि आपके साथ इंदिरा गांधी ने वैसा व्यवहार नहीं किया जिस तरह का व्यवहार आप लोग कर रहे है। असल में हमारे जैसे आदमी को मंत्री बनाया जाना चाहिए। जो आप लोगों को ठीक कर सके। जो जैसा होता है उसके साथ वैसा ही व्यवहार किया जाना चाहिए। आप लोग देश के अन्दर गन्दी परम्पराओं को डाल रहे है। आज हमारे देश के अन्दर यह वातावरण बनाया जा रहा है कि देश के नेता बेईमान है, देश के नेता चोर हैं, देश के नेता डकैत हैं। अगर देश के अन्दर यही वातावरण बनाया गया कि हिन्दुस्तान की भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी भ्रष्ट हैं, जवाहरलाल नेहरू भ्रष्ट थे या कांग्रेस के लोग भ्रष्ट हैं या बेईमान है तो हम भी यही कहेंगे कि: जनता सरकार के मंत्री बेईमान है, भ्रष्ट है। उन्होंने करोड़ों और अरबों रुपयों का गबन किया है, तस्करी की है। इस प्रकार से इन सब बातों का देश में प्रचार होगा। तब हिन्दुस्तान की जनता के मन में यह बात बस जाएगी कि इस देश के नेता बेईमान है। इसके परिणामस्वरूप इस देश में प्रजातंत्र कायम नहीं रह सकेगा। तब इस देश में मिलटरी हुकूमत आएगी। इस देश में तानाशाही होगी। तब श्री मोरारजी देसाई और चौधरी चरणसिंह अपनी जगहों पर नहीं होंगे। ऐसी स्थिति में हम सब लोग जेलों में होंगे। ऐसी परम्पराओं को देश के अन्दर डालना जिन परम्पराओं से प्रजातंत्र का चिराग

सदा के लिए गुल हो जाय, कहां तक उचित होगा, इस पर आज गम्भीरतापूर्वक विचार करने की जरूरत है। आज इस बात को कौन नहीं जानता है कि इन मंत्रियों की हालत यह है कि एक दिन लन्दन के अन्दर जनता सरकार के 12 मंत्री इकट्ठा हो गये। लन्दन के हिल्टन होटल में रहने को जगह नहीं मिली। इस बात को भी कौन नहीं जानता है कि रात दिन समाजवाद का नाम लेने वाले श्री राज नारायण जब जम्बो जेट विमान में बैठकर कुवैत के हवाई अड्डे पर पहुंचे तो रेडियो खरीदने के लिए विमान को 45 मिनट तक रोक कर रखा गया। इस प्रकरण से सारे अन्तर्राष्ट्रीय जगत में हिन्दुस्तान की बड़ी बदनामी हुई। इस बात को भी कौन नहीं जानता है कि दिन रात समाजवाद का नाम लेने वाले श्री जार्ज फर्नेन्डीज रात दिन विदेशों की यात्रा करते रहते हैं। इस बात को कौन नहीं जानता है कि कि ये ही वे लोग हैं जिन्होने समाजवाद को दुनिया में पूंजीपतियों के हाथ में गिरवी रख दिया है। आज हमारे देश में प्रजातंत्र को जबर्दस्त खतरा पैदा हो गया है। जनता सरकार के मंत्रियों के कारण हिन्दुस्तान की एकता खतरे में पड़ गई है। आज हमारे आसाम, बंगाल त्रिपुरा और नागालैण्ड के इलाके के लोग हिन्दुस्तान से अलग होने की बात सोच रहे हैं आज हमारे मद्रास में जन-घाती और राष्ट्र-घाती ताकतें उभर रही है। श्री मोरारजी देसाई जिस दिन हवाई जहाज की दुर्घटना से बचे, , मैंने ईश्वर से प्रार्थना की जो कि मोरारजी देसाई बच गये। यदि आज मोरार जी देसाई देश के प्रधान मंत्री न होते तो आज हमारा देश टुकड़ों में बंट गया होता। मोरार जी देसाई में कम से कम राष्ट्रीय भावनायें है वह एक राष्ट्रीय स्तर पर सोचते हैं और देश को एक साथ ले चलने की भावना रखते है। मोरारजी देसाई के प्रधानमंत्री होने से हम लोगों के मन में कोई बैचेनी नहीं है बल्कि हम यह सोचते हैं कि अगर मोरारजी देसाई देश के प्रधानमंत्री न होत तो हिन्दुस्तान को कई टुकड़ों में जनता सरकार बंटवा देती। आदरणीय उपासभाध्यक्ष महोदय, जनता सरकार के मंत्री झूठ बोलने, दिन रात चरित्र हत्या का वातावरण बनाने, मुल्क के अन्दर प्रजातंत्र को समाप्त करने की पृष्ठ भूमी तैयार कर रहे है, यही जनता सरकार का काम रह गया है। आदरणीय उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं आपसे कहना चाहता हूं कि प्रकाशवीर शास्त्री जी, जो हमारे मेम्बर पार्लियामेन्ट थे, उनकी मृत्यु रेलवे में एक्सीडेन्ट से हुई। जनता सरकार के गृह मंत्री ने एक बयान दिया। उस बयान से यह झलक आई कि कांग्रेस पार्टी के लोगों ने ही रेल का एक्सीडेन्ट कराया। यानी, विरोधी-दल के लोगों ने, उन ताकतों ने जो मार्च के चुनावों में हार गई थी, उन्होंने यह एक्सीडेन्ड कराया। इससे ज्यादा शर्म इससे ज्यादा बेहयायी का बयान दुनिया का कौन व्यक्ति दे सकता है? क्या ऐसा व्यक्ति हिन्दुस्तान का गृह मंत्री होने लायक है? प्रकाशवीर शास्त्री जी हिन्दुस्तान और कांग्रेस पार्टी के एक महान नेता थे। उनके मरने से कांग्रेस पार्टी की महान क्षति हुई है और हम केवल कांग्रेस के लोग ही नहीं, अन्य दलों के भी हर अच्छे आदमी को महान दुख हो रहा है। उनके मरने के बाद अपनी कमजोरियों को, अपनी असफलताओं को, अपने कार्यो को ढांपने के लिए इसे राजनैतिक रूप देने की कोशिश की जा रही है। श्री राज-नारायण ने लखनऊ में यह बयान दिया कि यह जो रेलवे एक्सीडेन्ट हो रहे हैं, उनके पीछे इंदिरा गांधी का हाथ है। जार्ज फर्नेडीज ने बयान दिया है कि इमरजेन्सी के दौरान उन्होंने 52 रेलवे एक्सीडेन्ट कराये। जिस व्यक्ति ने खुद रेलवे एक्सीडेंट करवाये, वह आज जनता सरकार में मंत्री बना हुआ है। इस तरह की बातें देश के अन्दर चल रही हैं और इस पूरी पार्लियामेंट को गूंगा बहरा बना कर बैठे हुए हैं। इस तरह की बातों को सुनने के बाद पार्लियामेंट क्यों चलनी चाहिए लोक सभा क्यों चलनी चाहिए? मैं जानता

[श्री कल्पनाथ राय]

हूं कि आप जैसे लोग किस भाषा को समझते हैं, किस लैंग्वेज को समझते हैं आपको ईंट का जवाब पत्थर मे मिलना चाहिए फिर आप कभी इस तरह से बयान नहीं देंगे। कांग्रेस पार्टी एक उदारवादी पार्टी है, यह पार्टी हमेशा नर्मपंथी पार्टी रही है। यह पार्टी हमेशा जनतांत्रिक पार्टी रही है, समाजवादी पार्टी रही है। यह इस पार्टी का इतिहास रहा है। अगर कांग्रेस पार्टी के लोग इस मामले में कुछ और होते तो आपकी समझ में आ गया होता। आज इस देश का गृह मंत्री जिसके हाथ में पूरे देश और जनता के जान-माल की जिम्मेदारी है, वह इस तरह का बयान दे रहा है कि हिन्दुस्तान में जो रेलवे एक्सीडेंट हो रहे हैं, उसके पीछे कांग्रेस पार्टी का हाथ है। क्या दुनिया में कोई गया से गया इन्सान इस चीज को, इस बात को मान सकता है ? देश में चरित्र हत्या का वातावरण बनाया जा रहा है, आल इण्डिया रेडियो से दिन रात झूठ बोला जा रहा है। कल आडवाणी साहब के आल इंडिया रेडियो ने बयान निकाला कि संजय गांधी और उनके साथियों ने रेल एक्सीडेंट कराया। कितना बड़ा झूठ है ? दिन रात भारतीय संस्कृति का नाम लेते हैं, दिन रात जनसंघ और हिन्दू राष्ट्र की बात करते हैं और दिन रात झूठ बुलवाते हैं तथा पार्लियामेंट के अन्दर जी हां में बात करते हैं। इस बात पर शर्म आनी चाहिए। जिस तरह से हिटलर के मंत्रिमंडल में उसका सूचना मंत्री गोवेल्स था, उसी तरह जनता मंत्रिमंडल में श्री आडवाणी गोवेल्स बनकर आये हुए हैं।

(Interruptions)

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF LABOUR AND PARLIAMENTARY AFFAIRS (DR. RAM KRIPAL SINHA): Sir, is he speaking on the Bill? He should speak on the Bill

श्री कल्पनाथ राय : दिन रात झूठ बोला जा रहा है, दिन रात चरित्र हत्या का वातावरण बनाया जा रहा है.... *(Interruptions)*

आदरणीय उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं आपसे .....

(Interruptions)

उपसभाध्यक्ष (श्री श्यामलाल यादव) : आप संक्षेप में बोलिये।

SHRI PATITPABAN PRADHAN (Orissa); Sir is it relevant to the Bill? What he is talking is not relevant to the Bill. And the language he is using is unparliamentary. . . *(interruptions)*

We want to know whether whatever the hon. Member is speaking has got any relevance to the Bill.

SHRI N. P. CHAUDHARI (Madhya Pradesh): It has got all the relevance.

SHRI PATITPABAN PRADHAN: What relevance has it got?

SHRI N. P. CHAUDHARI: I would request the hon. Member not to disturb the speaker.

श्री पतित पावन प्रधान : यह ठीक नहीं बोल रहे हैं, इससे तो हमारे सदन की इज्जत का सवाल पैदा हो गया है।

उपसभाध्यक्ष (श्री श्यामलाल यादव) : कृपया भाषा पर नियंत्रण रखिये।

श्री कल्पनाथ राय : आदरणीय उप-सभाध्यक्ष महोदय, आल इंडिया विद्यार्थी परिषद् और जनता पार्टी के संसद सदस्य श्री सुब्रह्मण्यम स्वामी ने कहा है कि श्री मोरारजी देसाई हिन्दुस्तान में नशाबन्दी करने से पहले अपने केन्द्रीय मंत्रीमंडल में नशाबन्दी लागू करें। केन्द्रीय मंत्रिमंडल में 13 मंत्री शराब पीते हैं। जनता पार्टी के संसद सदस्य श्री स्वामी ने कहा है कि 19 मंत्रियों में से 13 मंत्री शराब पीते हैं। यह उनकी पार्टी के नेता का कहना है। सुब्रह्मण्यम स्वामी ने प्रधान मंत्री को चिट्ठी भेजी है कि अटल बिहारी वाजपेयी ने अपने न्यूयार्क प्रवास के दौरान शराब और अन्य चीजों का इस्तेमाल किया। जनता सरकार के अधिकांश मंत्री दिन-रात शराब पीते

हैं। जनता सरकार के मंत्री आज विदेश यात्राओं की होड़ में लगे हुए हैं, करोड़ों रुपया इकट्ठा करने की उन में प्रतिस्पर्धा है। बृजमोहन के साथ अटल बिहारी वाजपेयी, नवल टाटा-जार्ज फर्नेंडीज़ के साथ, चन्द्रशेखर के साथ श्री गोयनका, श्री सी० बी० गुप्त बिरला के साथ। आज जनता सरकार जनता को भूल कर केवल देश के बड़े पूंजीपतियों से, बड़े मुनाफाखोरों से, तस्करों से करोड़ों रुपये इकट्ठा करके अपने अपने घटकों को मजबूत करने में लिए लगी हुई है। आज जनता में एक नारा है, जहां खिचड़ी सरकार हो गई फेल, खा गई राशन पी गई तेल। जनता पार्टी के शासन में, प्याज और आलू राशन में...

(Interruptions)

यह आज व्यापक चर्चा बनी हुई है। आज चर्चा है बेलची का हत्याकांड, धर्मपुरा का हत्याकांड, बढ़इया का हत्याकांड, लखनऊ के शिया-सुन्नी दंगे, कानपुर के दंगे, बनारस के दंगे। रामधन पार्टी के पार्लियामेंटरी सैक्रेटरी ने कहा कि जनता राज में जो जुल्म हो रहे हैं वह जुल्म दक्षिण अफ्रीका के गोरों के कालों पर हुए जुल्मों से बहुत ज्यादा हैं....

(Interruptions) यह आपकी जनता पार्टी के महामंत्री ने कहा है। आपकी जनता पार्टी के मंत्री ने कहा है। जामा मस्जिद के बुखारी ने कहा है कि जब तक हिन्दुस्तान का गृह मंत्री चौधरी चरण सिंह रहेगा तब तक हिन्दुस्तान के मुसलमानों का खून भारत की सड़कों पर बहता रहेगा। इसलिए इनको इस्तीफा दे देना चाहिए। जिस जामा मस्जिद के बुखारी ने जनता सरकार को सत्ता में लाया आज वही आठ महीने के अन्दर कहने लगा है कि हिन्दुस्तान के मुसलमानों की जिन्दगी चौधरी चरणसिंह के राज्य में खतरे में पड़ गई है। आज रामधन कहते हैं कि जनता सरकार के जुल्म दक्षिण अफ्रीका में हुए जुल्मों से ज्यादा हैं। तो अब गांधी जी के हत्यारों के हाथ में जनता सरकार की हकूमत है। जैसे किसी एक घड़े शराब में एक बोतल दूध होता है वैसे ही यह धनिक लाल मंडल, राजनारायण, जार्ज फर्नेन्डीज, घड़े शराब में एक बोतल दूध के समान हैं। यह शराब रूपी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के घड़े में बोतल रूपी दूध की तरह भरे हुए हैं। यह तो सत्ता के लालच में, सत्ता के लिए अपना गठजोड़ बनाए हुए हैं। तो आदरणीय उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं भारत की संसद के माध्यम से देश की जनता को आवाह्न करता हूं कि चरित्र की हत्यारी जनता सरकार, दिन-रात झूठ बोलने वाली सरकार, कांग्रेस जैसे महान पार्टी के साफ-पाक दामन पर काले धब्बे लगाने वाली सरकार को उखाड़ फैंको और बगावत का झंडा बुलन्द करो.... ताकि गांधी के सपने नेहरू के सपने को हिन्दुस्तान में हम चरितार्थ कर सकें। आदरणीय उप-सभाध्यक्ष महोदय, एक बात कहकर मैं अपनी बात खत्म करूंगा। गांधी जी की समाधि पर कसम खायी मंत्रियों ने, क्या हुआ उसका? आज 'पैगाम' अखबार में निकला है कि महात्मा गांधी नंगी लड़कियों के सात सोते थे यह जनता सरकार अखबार के माध्यम से गांधी की भी चरित्र हत्या कर रही है जिनकी कि समाधि पर इन्होंने कसम खायी थी। आज जवाहर लाल नेहरू के संबंध में कितनी गंदी और झूठी बातें, कहानियां आडवाणी जी और जनता सरकार के द्वारा निकलवायी जा रही हैं। आज जवाहर लाल नेहरू, गांधी जी, इंदिरा गांधी की तस्वीरें पूरे देश में ऐसे बिगाड़ी जा रही हैं जैसे अमरीका की सी० आई० ए० ने बंग बंधु मुजीबुर्रहमान का चित्र बंगला देश में बिगाड़ा था, एलन्दे का चित्र चिली में बिगाड़ा था। आज जनता सरकार के पीछे सी० आई० ए० काम कर रही है और पहली जनवरी को अमरीका के कार्टर साहब को लेकर पालखीवाला साहब उतर रहे हैं। हिन्दुस्तान का टेक ओवर अमरीका के हाथों होने जा रहा है। यह आखिरी काम जनता सरकार अमरीका की सी० आई० ए० के इशारे से करके हिन्दुस्तान को अमरीका के हाथ गिरवी करके कर रही

[Shri Sanat Kumar Raha] vious Government and after 8 months of the inception of the Janata Government. This Amending Bill is for future guidance. I welcome it and 1 support it. But I have got some observations. The main theme of the Bill is the Gandhian doctrine of austerity, simplicity, integrity and character in the leadership of the country. If this be so, how can you remove the impression which has already been created about the Indian polity after 30 years of independence? It is true that there are two styles of life and functioning. One is that of austerity and all these things are meant for the poor of the country or the middle class people. On the other hand, there is conspicuous consumption meant for the rich, the Ministers and the parliamentarians. These two styles of life are going on. There is a huge gap between the two. Who is to fill up this gap? It is not only the economy of austerity. It is not the economy part of it. Then it will be an economy of petty—mindedness. The emphasis has to be on the austerity of Gandhian doctrine and the living of life according to Indian traditional This will convince the people that there is no gap between them and the leadership. You can have good association with the Ministers also. Have we created such an impression? No. We have failed, both the Congress rulers and the present rulers. Recently some tours abroad are performed by various Ministers. After 30 years of independence they are coming anew to the governmental throne. There is a necessity to learn about internationalism, to learn about various world forces and in which direction they are moving. All these things should be learnt no doubt And in the interest of our country in the interest of our people, they should go abroad. But was there any necessity to take the whole team of the Cabinet to London? That is the question. How can you impress the public that We are disciplined men, we are Gandhian disciples, we are trained in Gandhian principles, we are force to abide by the doctrine of Mahatma Gandhi and so our life spirit of austerity is this? So, it is a question, of precept and it is a question of following it in an exemplary manner. That is how we can create an impression in the people and not otherwise.

Sir, there is another thing. We always talk of qualitative change in the economic sphere, in the cultural sphere, in the social sphere, in the political sphere and all that. But can we not change our life style? So, this Bill, I think, wants to change the life style, a change in the style of functioning so that people could feel a true association with the top administrators of this vast land. Sir, 70 per cent of our people are downtrodden. Only 30 per cent can have some means, and only 5 per cent at the top can have conspicuous consumption. Sir, the Janata Government has issued a good manifesto and whether this manifesto will be implemented or not, I do not know. Even if a part of it is implemented for the upliftment of the downtrodden, I would be thankful to them. But they cannot uplift the downtrodden within the capitalist framework, and all these so-called Gandhian precepts, sacrifices, etc. are a futile exercise. In the independence struggle, we followed Gandhiji and a life style of simplicity. These were the elements of our national struggle. But after independence, we have already forgotton that spirit. And what did Mr. Churchill, the veteran enemy of India, say just at the time of the Round Table Conference in 1930s when Mahatma Gandhi was going half-naked to London to parley with the representatives of the King Emperor? He said: "It is alarming and nauseating to see Mr. Gandhi, a Inner Temple lawyer, now a seditious fakir striving half-naked up the steps of the Viceregal Lodge to parley on equal terms with the representatives of the King Emperor." That is what he said. I think when these words were uttered by Churchill, inside the jail, we were all encouraged and emboldened that this was the glory

of India, the traditional life style of India, and it had been efficiently exposed by Mr. Churchill, the enemy of the liberation movement in the World as well as in India. So, I want the Minister who brought this Bill to express the view point behind this Bill. There is a spirit behind it. No Member in this House is against it. We must change our life style so that the gap between the general public and the administrators is removed. The general public have an impression that they are not with the administrators, they are not with the MPs, they are not with the MLAs and they are not with the Ministers. So, this gap should be removed. If there be any good, that good is this that the austerity of the Gandhian life, the simplicity and intergrity of character in the Indian tradition should be maintained cent per cent by the ruling party as well as by the opposition. I want that this should be the lesson of this Bill.

With these words, Sir, I conclude.

श्रीमती रत्न कुमारी (मध्य प्रदेश) : उपसभाध्यक्ष महोदय, मंत्रियों के वेतन और भत्ते संबंधी विधेयक पर आपकी अनुमति से कुछ विचार रखना चाहती हूं। मैं यह मानती हूं कि मंत्रियों को साधारण सदस्यों से अधिक सुविधा प्राप्त होनी चाहिए। इस समय मंत्रियों को जो सुविधाएं प्राप्त हैं उनमें अड़तीस हजार रुपये तक के फर्नीचर सहित निःशुल्क आवास वे रख सकते हैं। बहुत से मंत्री अपने घरों को अपने मंत्रालयों द्वारा फर्निश करा लेते हैं और राजसी ठाठ से रहते हैं। जिन मंत्रियों के पास उनका खुद का मकान है, क्या उन्हें भी यह सुविधाएं सुलभ करना उचित होगा। सरकार को इस पर विचार करना चाहिए। एक ही मकान में बहुत से एयर कंडीशन लगवा लिये जाते हैं। सन् 1962 में यह प्रेक्टिस थी कि पानी और बिजली के बिल यदि सौ रुपये से ज्यादा के आते थे तो मंत्रिगण उन्हें अपनी जेब से चुकाते थे। अब क्या होता है, यह सरकार के देखने की बात है। अब मंत्रियों का यह विचार बन गया है कि विपुल भत्तों और अनेक सहायकों के बिना ये काम नहीं कर सकते। परन्तु संसद के अधिकतर सदस्यों के पास न तो निजी सहायक है और न सवारी, फिर भी अनेक सदस्य मंत्रियों की अपेक्षा अधिक प्रभावी ढंग से कार्य करते हैं तथा सदन की कार्यवाही में अधिक सक्रिय भूमिका निभाते हैं।

मंत्रियों को जो सुविधाएं प्राप्त हैं उनका उपयोग उन्हें दफतर में बैठकर शासन के इतिहास पर मनन, पठन करते हुए अपने मंत्रालय के कार्यों को अधिक चुस्त और उपयोगी बनाने में करना चाहिए। केवल विदेशों में दौरे करते रहने से तो काम नहीं चलेगा। अभी हाल में ऐसा समय भी आया था कि भारत सरकार के प्राय: सभी कैबिनेट मंत्री विदेश यात्रा पर थे। मंत्री के विदेश जाने पर उनके साथ पूरा स्टाफ होता है और विदेशी मुद्रा अधिक खर्च होती है। इस विषय में प्रधान मंत्री जी को अपने मंत्रियों के लिए मार्गदर्शक सिद्धान्त निर्धारित करने चाहिएं।

माननीय मंत्रीगण जो आज सरकारी सीटों पर बैठे है किसी समय विरोध पक्ष में बैठकर कांग्रेसी मंत्रियों के कार्यकलाप की आलोचना किया करते थे। अपने को गांधीवादी कहने वाले मंत्रियों को अपना रहन-सहन गांधी जी की तरह सादगीपूर्ण रख कर उन्हीं की तरह साधारण जीवन जीकर दूसरों के लिए आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए।

जनता और सरकार अथवा शासक और शासित के मध्य खाई न बढ़े, यह लोकतंत्र के स्वस्थ विकास के लिए परमावश्यक है। इस दृष्टि से भी मंत्रियों को सादा जीवन की मिसाल पेश करनी चाहिए। सुविधाओं के मोहजाल में पड़ने के बजाय अगर वे कर्त्तव्य पालन पर समुचित ध्यान दें तो जनता की अधिक कारगर ढंग से सेवा कर सकते है।

SHRI S. W. DHABE (Maharashtra): Mr. Vice-Chairman, Sir, this is an innocuous Bill but lays down an important rule, namely, that every rule made under section 11 shall be laid before Parliament for its approval so that the matter can be diseussed and proposals made. The Committee on Subordinate Legislation had rightly said that this matter requires an amendment and now an amendment has been brought forward by the Minister.

Sir, I am surprised that this opportunity was not taken by the Minister to prescribe a code of conduct for the Ministers. Very seldom such Bills come before Parliament and such an opportunity as this would be the proper opportunity—especially in our federal structure—to prescribe what should be the code of conduct for our Ministers and what should be the style of their functioning, and as the Janata Manifesto has said, what should be the norms of being in the Cabinet.

There are examples in the world and even in our country when Shri Lal Bahadur Shastri had to resign only after one accident took place and when Lord Profumo, a Minister in the British Cabinet, had to resign because libel was published. But here we talk of principles only when it suits the convenience. When it does not suit their convenience they only criticise what the previous Government was doing.

I am surprised to find one CPI Member who spoke just now saying that through emergency, the Congress Government was exposed. At least those who supported emergency in this House and their leaders were saying every day that it was a very good action taken by Shrimati Indira Gandhi to suppress the Fascist-anti Indian forces and that it was a historical thing. Now the cowards of emergency period today are parading that they are the valiant people and the brave people. Not only these people but the head of the RSS organisation who is the diety for so many Janata Party people had written to the ex Prime Minister congratulating her for her victory in the Supreme Court and had written to her that they were ready to abide by whatever directions were given by the Government and that they were law-abiding and had nothing to say against the emergency. Every body knows that out of six thousand people who were arrested, more than two thousand people gave an apology in writing *or* orally to get a release. Now, some of them have become Members of Parliament and of Assemblies. I do not want to give their names. Then to talk of principles, in my humble opinion, is an absurd thing.

What are the principles on which this federal Constitution can succeed? Is a code of conduct not more essential in this country? When a different political party is in power in the State, is it proper for the Industry Minister to criticise the Chief Minister of Tamil Nadu by saying that he should not have given a courtesy call to Shrimati Indira Gandhi or welcome her? As if, State Governments have no powers and the State Ministers have no freedom. Those who talk of freedom and liberty here think that whatever they feel is freedom and liberty and whatever they say is the rule of law. Is it the rule of law when Mr. Bhandari was saying—he is my friend and I have great regard for him—to withdraw cases against the Ministers? What business have they got? They have not explained up till now in the House.

SHRI SUNDER SINGH BHANDARI: Now the court has also upheld.

SHRI S. W. DHABE: Why was the dynamite case withdrawn? I am not saying about the court's verdict. Every body knows about the Criminal Procedure Code. It is the Government and the prosecution which has the right and discretion to decide whether to conduct a case or not to conduct a case. It was possible that the Minister would have been acquitted. But, at least, the public opinion and the conscience would have been

clear that the Minister has been acquitted. Those who read the books on this know what was happening at that time. I only want to make out a point. The first principle of democracy is respect for the opinion of others. One General Secretary of their party went to Maharashtra and criticised that there was no law and order situation when Shrimati Indira Gandhi was arrested. All the newspapers unanimously condemned this method of denigrating the State Government and what happened in Andhra? Is it proper—when thousands of people are dying and every body is in distress—to say that the Chief Minister of Andhra State was whiling away his time when his people were dying? It is highly ridiculous to say it.

AN HONOURABLE MEMBER: They want to make a palace over the dead bodies.

SHRI S. W. DHABE: The Government there was taking all action. It is possible that their efforts may be less; but to say that they are dishonest or insincere, I would say, Sir, it is the lowest way of presenting the picture. It was a situation of a great calamity and thousands of people in the world are helping India in this hour of distress. It is just like a situation when there is a war. We have got to say that we are all united. When Pakistan attacked us, when there was Bangladesh question, we all worked unitedly. But this is their new style of functioning, making political capital out of everything. When the Assembly elections are due, it does not befit the leader of a party or any Minister to make such statements. I think this is the time and this is the occasion when a code of conduct should have been decided upon. What is integrity? The Prime Minister has said much about prohibition. He has said that even the officials should not drink. The hon. Chairman has raised this question on that day. They want even the High Court judges to take an additional oath that they will not drink alcohol. A very important member, an influential member of the party, Mr. Subramanian Swamy has said that thirteen Ministers are addicted to alcohol. This is out of the total number of nineteen. Why should they not resign? They have no right to ask the people and they have no right to preach sermons to the people when they are not practising what they have said in their own manifesto and in their own programmes. They talk of integrity. But one member of their party has said something. Again, what happened to the Coca Cola business?

Therefore, Sir, the three things which are very essential for a code of conduct for Ministers are; integrity, code of behaviour in our federal structure and austerity. Now, what is happening today? What are the Ministers doing? They are having a capsule unearthed to find out what is the history written therein and whether it contains any falsehoods. But what are they doing today? One company Messrs Amarjyoti Industries, brought out candles for sale in Market. This was published in a number of newspapers. Label on them shows Mahatma Gandhi saluting the RSS flag and behind him stand Dr. Hedgewar and the R.S.S, volunteers. Coming from Nagpur, I know what is the cult of the RSS. They believe in—we may not agree with them—and they want the Hindu culture to develop, the Hindu Nationalism to develop and the Hindu Rash-tra to develop. They want a cultural renaissance and they want to propagate their own philosophy. In the autobiography of Shri Morarji Desai, it is said that the man who killed Gandhiji was an RSS worker. It may be right or wrong. But ultimately, they may rewrite history and say also that it was not Nathuram Godse of R.S.S, who killed Mahatama Gandhi, but he was a Congress worker. Such is their style of functioning. They may not have regard for Mahatma Gandhi or Pandit Nehru. But they have no right to denigrate history, to change the history, to deny facts and allow such propaganda to go on. Such is their style of functionig.

[Shri S. W. Dhabe] I would like to suggest one more thing. They say about expenditure They say Smt. Indira Gandhi and others were lavishly spending, that they have misused the funds, that there has been misuse and so on. The 'Indian Express' has made a comment that so many Ministers were *in* London that a Cabinet meeting could have been held in London itself. A Minister has gone out seven times in six •months. Mr. Fernandes, the Minister of Industry, went for the Socialist International meeting. He, of course, made a speech there against Indira Gandhi. Every day and every where, he says something against Indira Gandhi. I think he has got an Indira phobia. Why should so many Ministers go abroad? Ministers go to such meetings where Secretaries would have been enough. Because of this, many meetings here were adjourned. The Consultative Committee of the Ministry of Industry had to be cancelled because the Minister was abroad. A code of conduct is necessary to minimise the expenditure as well as to see that the Ministers practice what they preach.

Lastly about expenditure. The figures were given here. One Minister had spent Rs. 18,000 on telephone bills in three months. Is it the way of austerity? I expected that the hon. Mi'nister would have used this occasion to make a provision to limit the expenditure on telephone bills to Rs. 500 or Rs. 1,000. There should be some financial limit. There was a provision in section 10(3) of the Government of India Act 1935— I quote Basu's Constitution at page 460—that the Legislature might determine the salaries of Ministers from time to time, but the salaries of Ministers could not foe varied during their term of office. That was 1he provision. Sir, this salient provision was there under the old Government of India Act, 1935. It was certainly changed in the Indian Constitution and a rule-making power was given, but there is a gross misuse of this rulemaking power. There is no limit on the expenses on a Minister's bungalow, or his tour, or on his telephone. Is it proper? Can our country afford such a lavish expenditure by Ministers? I, therefore, say that there should be a serious thinking on having a code of conduct even for Members of Parliament, when we are discussing the Lokpal Bill and many other matters. We want corruption to be eradicated at the highest level. What steps have been taken? I would have been very glad if Mr. Bhandari had made a constructive suggestion of limiting the expenditure. Sir, it is a great tragedy with the Indian democracy that when we change the sides we change our values, whatever is beneficial to us we accept it and go ahead for the selfish ends of the party. If the democracy has to succeed, if the poor masses and the working class and the down-trodden people have to get any benefit of all these things, if they really want it, it is no use dismissing or suspending a Secretary of a Department because he has taken a wrong action. The real thing is political corruption. It is the biggest evil in our Indian democracy. Political corruption has to be removed, but how? Political corruption cannot be removed because the Ministers themselves are not setting up an example of purity, integrity and respect for the dissenting opinion of others. This has been found at places where the Governments are being run by opposition parties. Take the case of the Jammu and Kashmir Government where they have issued an Ordinance. You might say that on merits it is bad or good but in a border area can you run a Government by rule of law, can you file a case before the Shah Commission or in the Court of a Magistrate? Sabotages are taking place by Margis and others. Our revered leader of this House, a prominent Member, for whom we have great respect and whose death the whole country mourned—Shri Prakash Veer Sastri—was a victim of sabotage. It was not the first case of sabotage. Sabotage took place on Varanasi Express. Government knew about it. All our embassies are on attack by those who believe in violence. So many officials' lives are in danger.

If our officers, if our Secretaries have no security of life, if their life is not protected, if the public is not guaranteed proper transport facilities, I think our country will lead to anarchy and nowhere else. As one of the Members on that side has said, when violence is taking place, when the Prime Minister on the house top says that he is the follower of Mahatma Gandhi, that he is the follower of Truth and nonviolence, is it proper in our country to tolerate violence and those who are sabotaging? No firm action has been taken up till now. A feeling is growing that the Janata Party is not interested in the welfare of the people. I, therefore, appeal on this occasion through you to the Janata Party Ministers, their thinkers and their leaders, not to think of the selfish ends, think of it only for a temporary period. Let all the good traditions be laid down so that our democracy becomes safe, lives of the poor people become safe and the Indian democracy becomes a successful experiment in whole of Asia.

श्री धनिक लाल मंडल : महोदय, प्रस्तुत बिल एक बहुत छोटा बिल और साधु बिल है । इस बिल में दो बातों का उपबन्ध किया गया है, पहली बात यह कि जो मुख्य विधेयक है 1952 का, जिसमें रूल-मेकिंग पावर गवर्नमेंट को दिया गया है और गवर्नमेंट ने समय-समय पर उसके तहत रूल्स बनाए हैं, और सबार्डिनेट लेजिस्लेशन कमेटी ने यह आब्जर्व किया है कि यद्यपि बहुत विपरीत टिप्पणी करने के लिए कोई बात नहीं है फिर भी सरकार को इतने व्यापक अधिकार नहीं होने चाहिएं फाइनेंस के मामले में । यह जनतंत्रीय सिद्धान्त और पब्लिक इंटरेस्ट के हित में है कि सरकार इसकी स्वीकृति सदन से ले —नियम की स्वीकृति सदन से ले । सरकार ने इस बात को स्वीकार कर लिया है ।

दूसरी बात का उपबन्ध यह है कि जो मुख्य विधेयक है जिसमें रूल्स-मेकिंग पावर गवर्नमेंट को दिया गया है लेकिन भूत-लक्ष्य से कोई कानून बनाने का कोई उपबन्ध विधेयक में नहीं है । फिर भी इसके तहत ऐसे नियम बने हैं, रूल्स बने हैं और उन नियमों को भूत-लक्षी प्रभाव दिया गया है, रेट्रोस्पेक्टिव इफेक्ट दिया गया है, या जो अनियमित है उसको नियमित किया जाए । महोदय, इस सरकार ने इन दोनों सुझावों को मान लिया है और इसीलिए यह अमेंडमेंट बिल लाया गया है । ये जितनी बातें माननीय सदस्यों ने इस संबंध में कहीं हैं वे हमारे समय की नहीं हैं । ये उस समय की हैं, जब, जो माननीय सदस्य उस तरफ बैठे हुए हैं, उनकी सरकार थी । हम तो सबार्डिनेट लैजिसलेशन कमेटी के सुझावों को मान कर उन अनियमित कामों को अब नियमित करने जा रहे हैं । उन्होंने जो व्यापक अधिकार ले लिए थे, जिसका उन्होंने दुरुपयोग किया था, हम उस अधिकार को अब छोड़ने जा रहे हैं और सदन को वह अधिकार देने जा रहे हैं । माननीय सदस्य कहेंगे, तो मैं उस सूची को पढ़ दूंगा कि किस मिनिस्टर के नाम कितना पैसा है । ये भूतलक्षी प्रभाव से नियम बनाए गए और जो बेनिफिशियरीज हुए, आप कहें तो सब के नाम पढ़ दूं । वह इस प्रकार हैं—

	Sumptuary allowance of	Retrospective effect	
		From	To
Minister of Defence Organisation . . .	Rs. 250 p.m.	1-6-53	4-4-57
Minister of Informtion and Broadcasting . . .	Rs. 250 p.m.	16-12-53	4-4-57
Minister of Community Development . . .	Rs. 250 p.m.	20-9-56	4-4-57
Minister of Rehabilitation	Rs. 250 p.m.	14-12-56	4-4-57
Minister of Health	Rs. 200 p.m.	1-8-58	4-8-58
Minister of Works, Housing & Supply . . .	Rs. 250 p.m.	10-4-62	7-6-62
Minister of Community Development and Cooperation	Rs. 250 p.m.	16-2-63	7-3-63
Minister of Works, Housing and Rehabilitation	Rs. 250 p.m.	15-11-62	7-3-63
Minister of Works and Housing . . .	Rs. 250 p.m.	16-4-64	6-6-64
Prime Minister	Rs. 500 p.m.	28-564	29-10-64

SHRI S. W. DHABE: I would like to have a clarification from the Minister. Under section 11 of the old Act .... *(Interruption)* 5 P.M.

श्री धनिक लाल मंडल : यह मैं आपको इसलिये बता रहा हू *(Interruptions)* यह मैं आपको इसलिये बता रहा हूं कि यह सारे मंत्रिगण थे जिन्होंने नियम बना कर भूतलक्षित प्रभाव जो पैसा लिया है मैं उसकी सूची आपको पेश कर रहा था। यह सारी सूची मंत्रियों की हमारे पास है। अब हम इसको रेगुलराइज करने जा रहे हैं। यह मैंने इसलिये कहा कि यह उस समय का किया हुआ है। अब मैं आपको अपने बारे में कह दूं कि क्या सादगी करने जा रहे हैं। यह तो उनके समय का है :

	Actuals for 1976-77
Salary . . .	14,55,757
Sumptuary Allowance .	1,23,655
Tour expenses . .	1,01,43,766
	1,17,23,188

और हम लोगों का जो एक्चुअल है वह है 50 लाख 96 हजार और यह सारे साल का है। इससे अधिक नहीं खर्च किया जायेगा। तो यह मैंने आपसे बताया। हमने जो कहा कि हम गांधी जी के रास्ते पर चलेंगे और सादगी से जीवन बितायेंगे और कर्तव्य का जीवन बितायेंगे तो इस को आप देख लीजिए। यह सब मैंने आपके सामने रखा और यह जो आंकड़े हैं वह मैं आपके सामने प्रस्तुत कर रहा हूं। इनसे हमारी बातों का समर्थन होता है। हम लोग कोई बहुत बड़ी बातें नहीं कर रहे हैं। हम लोग जो कहते हैं वही करतेहैं।

हमारे माननीय सदस्य कल्पनाथ राय जी ने कहा....

एक माननीय सदस्य : उनको छोड़ दीजिए।

श्री धनिक लाल मंडल : कुछ बातें जो उन्होंने कहीं उनका प्रतिवाद आवश्यक है। गृह मंत्री जी के सबंध में बोलते हुए उन्होंने कहा कि गृह मंत्री जी ने कांग्रेस का नाम लिया है रेल दुर्घटना के सिलसिले में। मैं इसका प्रतिवाद करता हूं। गृह मंत्री जी ने न तो किसी संगठन का नाम लिया है और न किसी व्यक्ति का नाम लिया है।

SHRI NARASINGHA PRASAD NANDA (Orissa): For your information it was Mr. Rajnarain who made

the press statement at Lucknow alleging that the Congress Party is involved in sabotage. He is a Minister of the Centre and makes such irresponsible statements. It does not look proper. Control him first.

श्री धनिक लाल मंडल : गृह मंत्री जी के संबंध में श्री कल्पनाथ राय जी ने जो बातें कहीं हैं मैं उन का प्रतिवाद करता हूं। गृह मंत्री जी ने किसी दल का नाम नहीं लिया है और न किसी व्यक्ति का नाम लिया है । उन्होंने कहा है कि जांच बहुत सरगर्मी से चल रही है। मुस्तैदी से चल रही है और जांच का प्रतिवेदन आने पर ही वह ऐसी स्थिति में होंगे कि वह सदन को इस संबंध में कोई जानकारी दे सकें। इस से अधिक उन्होंने कुछ नहीं कहा है ।

श्री राजनारायण जी के संबंध में बोलते हुए श्री कल्प नाथ राय जी ने कहा कि वह जम्बो जेट से जब यहां आ रहे थे तो कुवैत में उस को रोक कर एक रेडियो खरीदने के लिए गए। यह बिल्कुल गलत बात है । यह बात सही नहीं है और मैं इस का प्रतिवाद करता हूं।

SHRI NARASINGHA PRASAD NANDA: He was in the plane and sent his Secretary to purchase a radia set.

श्री धनिक लाल मंडल : यह बहुत विशाल देश है और उस में मंत्रियों को अंतर्राष्ट्रीय दौरे पर जाना पड़ता है। इतनी बड़ी दुनिया में हम सब से अलग नहीं रह सकते और सब से अलग रह कर अपना काम नहीं कर सकते ।

दुनिया आज एक परिवार की मानिन्द हो गई है और सभी देशों की एक दूसरे पर निर्भरता है । इसलिए मंत्रियों को काम से जहां भी जाना होता है वह जायेंगे ही ।

श्रीमन्, इस बिल के सम्बन्ध में जो बातें कहीं गई हैं और जो सुझाव दिये गये हैं, हम लोग उन पर गौर करेंगे। आपने जो सुझाव दिए हैं उन पर गौर करेंगे । जो बातें प्रतिवाद करने योग्य थी उनको प्रदिवाद कर दिया गया है। जो बातें गौर करने योग्य हैं उन पर हम गौर करेंगे । अतः मेरा निवेदन है कि इस बिल को पास कर दिया जाए।

SHRI S. W. DHABE: Sir, the Minister said that we have given retrospective effect. I find that original section 11 of the Act says, "The Central Government may make rules to carry out the purposes of this Act." The only change made was in section 2. Previously the section said that rules can be made by the Central Government but they should be placed before Parliament for information. Now original section 11(2) says: —

> "All rules made under this Act shall be laid before both the Houses of Parliament as soon as may be after they are made."

Now this only change has been made by this because the Committee on Subordinate Legislation says that the rules must come before this house. Section 11(1) is the same. Section 11(2) provides that "Every rule made under this Act after the commencement of the...Act shall be laid before each House of Parliament and no such rule shall come into force until it has been approved..." Therefore, the cha'nge is only procedural and there is no question of any lapse by the Government. These were the difficulties pointed out by the Committee on Subordinate Legislation.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SHYAM LAL YADAV): Mr. Minister, do you want to say anything?

SHRI DHANIK LAL MANDAL: I have nothing to say, Sir.

SHRI NARASINGHA PRASAD NANDA: The Minister should have clarified at least one point—why Mr. Rajnarain made such an irresponsible statement at Lucknow.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SHYAM LAL YADAV): I cannot compel him.

SHRI DHANIK LAL MANDAL; I have no information.

THE VICE-CHANRMAN (SHRI SHYAM LAL YADAV): The question is:

"That the Bill further to amend the Salaries and Allowances of Ministers Act, 19-52, as passed by the Lok Sabha, be taken into consideration."

The motion was adopted.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SHYAM LAL YADAV): We shall now take up Clause-by-Clause consideration of the Bill.

Clauses 2 *and* 3 *vizre added to the Bill.*

Clause 1, *the Enacting Formula and the Title were added to the Bill.*

SHRI DHANIK LAL MANDAL: Sir I move:

"That the Bill be passed."

The question was nuz and the motion was adopted.

श्री उपसभाध्यक्ष (श्री श्यामलाल यादव) : अब सदन की कार्यवाही कल सवेरे 11 बजे तक के लिए स्थगित होती है।

The House then adjourned at nine minutes past five of the clock till eleven of the clock on Thursday, the 1st December, 1977.